• कविता...

अपना घर

अपने घर की बात अलग है
लगता है घर प्यारा
कच्चा-पक्का ऊंचा-नीचा
सायबान ओसारा
छत लगती है इंद्रलोक-सी
आंगन बागों जैसा
दरवाजे, घर का चबूतरा
मीठे रागों जैसा
चिड़ियां साथिन होतीं, जिनसे
घर गूंजता हमारा
दिल्ली है, बंबई शहर है
भवन बीस तल वाले
आसमान को छूते हैं ये
लगते बड़े निराले
मगर खुशी की तो बहती है
अपने ही घर धारा
घर का हर कमरा-बरामदा
हर खिड़की-दरवाजा
जैसे हर क्षण हमें बुलाते
कहते आ जा, आ जा
घर में मां है, थपकी देती
सो जा राजदुलारा
बाहर अगर कहीं जाते हैं
घर की यादें आतीं
बहुत दूर हों, तब तो अक्सर
आंखें भर-भर जातीं
घर खिल-खिल हंसने लगता है
ज्यों संसार हमारा
अपने घर की बात अलग है
लगता है घर प्यारा।

■ श्रीप्रसाद

• चुटकुले...

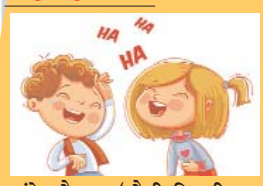

अंग्रेज कैप्टन (फौजी सिपाही से)– इस आदमी के कान काट दो!
चोर– नहीं साहब, मेरे कान मत काटो, नहीं तो मैं अंधा हो जाऊंगा!
अंग्रेज कैप्टन–बेवकूफ, कान काटने से कोई अंधा होता है?
चोर– अरे बेवकूफ, कान काट देगा तो चश्मा क्या दूसरे के कान पर लगाऊंगा!

संता आर्मी में भर्ती हो गया,
कैप्टन–नौजवान आगे बढ़ो ,
संता आगे नहीं बढ़ा,
कैप्टन–तुम आगे क्यों नहीं बढ़े?
संता–सर आपने ही तो कहा , 9 जवान आगे बढ़ों,
मैं तो दसवें नम्बर पे लगा हूं।

• जानकारी...

सबसे ज्यादा शाकाहारी लोग

क्या आपने कभी सोचा है कि दुनिया में सबसे ज्यादा शाकाहारी आबादी वाला देश कौन सा है? दरअसल इसका जवाब है भारत। भारत की लगभग 30% से 40% जनसंख्या शाकाहारी जीवन शैली को अपनाती है, लेकिन सिर्फ भारत अकेला ऐसा देश नहीं है जो शाकाहारी भोजन को अपनाता है। आइए जानते हैं दुनिया के उन पांच देशों के बारे में जहां पर शाकाहारियों की संख्या सबसे ज्यादा है।

भारत-भारत इस मामले में सबसे ऊपर है। ऐसा अनुमान है कि देश में लगभग 27.6 करोड़ लोग शाकाहारी हैं। भारत में शाकाहार की जड़ें हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म से जुड़ी हुई हैं। भारतीय व्यंजन शाकाहारी भोजन का शानदार नमूना पेश करते हैं। इसमें पनीर टिक्का, दाल मखनी, डोसा, पोहा और सब्जी रोटी जैसे व्यंजन शामिल हैं।

मेक्सिको -मेक्सिको की लगभग 19 प्रतिशत आबादी यानी कि लगभग 2.38 करोड़ लोग शाकाहारी जीवन शैली को अपनाते हैं। दरअसल यह बदलाव पशु कल्याण और पर्यावरणीय स्थिरता के बारे में बढ़ती जागरूकता और देश के स्वाभाविक रूप से शाकाहारी अनुकूल व्यंजनों की वजह से है। बींस और मकई से लेकर एवोकाडो और मिर्च तक मैक्सिकन खाना प्लांट आधारित सामग्रियों से भरपूर होता है।

ब्राजील-इस लिस्ट में तीसरे स्थान पर ब्राजील है। यहां लगभग 14% लोग यानी कि 2.9 करोड़ लोग खुद को शाकाहारी मानते हैं। यहां पर शाकाहार को अपनाना पर्यावरणीय चिंताओं से जुड़ा हुआ है। खासकर पशुपालन की वजह से वनों की कटाई से जुड़ी हुई चिंताएं। साओ पाउलो और रियो डी जेनेरा जैसे शहर में पहले से कहीं ज्यादा शाकाहारी रेस्टोरेंट और बाजार हैं।

ताइवान-ताइवान इस सूची में चौथे स्थान पर है। यहां की लगभग 13 से 14% आबादी मांसाहार से दूर रहते हैं। यहां पर शाकाहार बौद्ध धर्म के करुणा के सिद्धांतों पर आधारित है, लेकिन स्वास्थ्य और पर्यावरणीय कारणों की वजह से भी इसे एक आधुनिक जीवन शैली के रूप में अपनाया जा रहा है। सरकार भी सक्रिय रूप से शाकाहार को बढ़ावा दे रही है और यह द्वीप एशिया के सबसे जीवंत शाकाहारी भोजन परिदृश्यों में से एक है।

इजराइल-इस सूची में पांचवें स्थान पर इजराइल है। यहां की 13% आबादी शाकाहारी भोजन का पालन करती है। यह कदम आंशिक रूप से यहूदी आहार संबंधित नैतिकता की वजह से उठाया गया था। तल अवीव जैसे शहर दुनिया की शाकाहारी और शाकाहारी राजधानियों के रूप में पहचाने जाते हैं। यहां पर फलाफल और हम्मस से लेकर शाकाहारी सूशी और बर्गर तक कई व्यंजन सिर्फ पौधों पर आधारित बनाए जाते हैं।

• गोनू झा

गुलाब की सुगन्ध

एक दिन मिथिला नरेश अपनी पुष्पवाटिका में टहल रहे थे। उनके साथ थे उनके मंत्री। किसी कारणवश गोनू झा महाराज से मिलने आए तो महाराज ने उनको भी पुष्पवाटिका में ही बुला लिया।

महाराज अपने मंत्री से कुछ बातें करते रहे, कुछ निर्देश देते रहे। गोनू झा उन दोनों के साथ टहलते रहे। मंत्री मन ही मन खुश हो रहा था कि महाराज गोनू झा को महत्त्व नहीं दे रहे हैं...

मिथिला के लोग पाक-कला में निपुण होते हैं। तीज-त्योहारों पर तो प्रायः हर घर में तरह- तरह के पकवान बनते हैं। आम दिनों का भोजन भी सुस्वादु होता है। रंगों से मिथिलांचल के लोगों का खास लगाव है। कला-प्रेमी ऐसे कि अपनी चित्रकारी में प्राकृतिक रंगों का ही उपयोग प्राचीन काल से करते आ रहे हैं। सुगन्ध-प्रेमी भी हैं मिथिलावासी। प्रायः हर घर के अहाते में बेला, चमेली, कचनार, जूही, कनक, कटेली चम्पा, रातरानी जैसे पुष्पों के पौधे मिल ही जाएँगे ।

एक दिन मिथिला नरेश अपनी पुष्पवाटिका में टहल रहे थे। उनके साथ थे उनके मंत्री। किसी कारणवश गोनू झा महाराज से मिलने आए तो महाराज ने उनको भी पुष्पवाटिका में ही बुला लिया।

महाराज अपने मंत्री से कुछ बातें करते रहे, कुछ निर्देश देते रहे। गोनू झा उन दोनों के साथ टहलते रहे। मंत्री मन ही मन खुश हो रहा था कि महाराज गोनू झा को महत्त्व नहीं दे रहे हैं। मंत्री को निर्देश दे चुकने के बाद महाराज अचानक मंत्री से कहने लगे -'मंत्री जी, इस पुष्पवाटिका में मैं जब कभी आता हूँ तो मुग्ध हो जाता हैं। जिस पौधे के पास जाओ, उसी पौधे से एक विशेष सुगंध का अहसास मन में भर जाता है। लेकिन मुझे इन सभी फूलों में गुलाब अधिक पसन्द है। देखने में भी सुन्दर और सुगन्ध ऐसी कि म्लान मन को भी आनन्दित कर दे। क्या ऐसा कोई उपाय है कि मैं जिस पौधे के पास जाऊँ, वहाँ से मुझे गुलाब की सुगन्ध ही मिले?'

मंत्री ने जब महाराज की बातें सुनीं तो वह अवाक रह गया। उसकी समझ में नहीं आया कि वह महाराज को क्या उत्तर दे। भला कचनार से गुलाब की सुगन्ध कैसे आ सकती है? कोई भी फूल अपना ही सुवास देगा। महाराज को यह क्या सूझी? अचानक मंत्री को आई बला को टालने की तरकीब सूझ गई। उसने तुरन्त महाराज से कहा -'महाराज! गोनू झा के रहते हुए इस प्रश्न का उत्तर मैं दूँ, उचित नहीं लगता!'

महाराज समझ गए कि मंत्री उन्हें कोई उपाय बताने की स्थिति में नहीं है, इसलिए वह बात टाल रहा है। वे मन ही मन मुस्कुराए और फिर गोनू झा की ओर देखा।

गोनू झा ने एक पल भी गँवाए बिना कहा -'महाराज! शाम ढल रही है। आपको ठंड लग सकती है। मैं तुरन्त आपका दुशाला लेकर आता हूँ,' और महाराज की स्वीकृति के बिना ही मुड़े और महल की ओर चले गए।

-जारी

• रोचक...

चांदी

कभी आपने अपने घर की चांदी की पूजा की थाली या पायल को देखा होगा, जो कुछ महीनों बाद ही हल्की काली पड़ जाती है। वहीं सोने की अंगूठी या हार सालों तक उसी चमक के साथ दमकते रहते हैं। यह फर्क सिर्फ रंग या कीमत का नहीं, बल्कि धातुओं की रासायनिक प्रकृति का है। असल में, चांदी एक ऐसी धातु है जो हवा में मौजूद सल्फर यौगिकों से जल्दी प्रतिक्रिया कर लेती है। खासतौर पर, हवा में मौजूद हाइड्रोजन सल्फाइड गैस से। जब यह गैस चांदी की सतह के संपर्क में आती है, तो एक रासायनिक प्रक्रिया होती है, जिससे सिल्वर सल्फाइड बनता है। यही परत चांदी को धीरे-धीरे काला कर देती है। यह प्रक्रिया टार्निश कहलाती है, यानी चांदी की सतह पर एक रासायनिक परत का जम जाना, जो उसकी चमक को ढक देती है। हैरानी की बात है कि यह गैस हमारे आसपास की सामान्य चीजों से निकलती है, जैसे प्रदूषण, धूल, रबर, परफ्यूम, डिटर्जेंट, यहां तक कि इंसानी पसीने में भी कुछ मात्रा में सल्फर पाया जाता है।

• अंधेरे में...

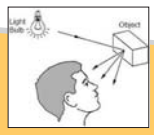

हमारी आंखें किसी चीज को तब देख पाती हैं, जब उस पर लाइट पड़ती है। फिर वो लाइट ऑब्जेक्ट से टकराकर हमारी आंखों में जाती है और हम किसी चीज को देख पाते हैं। ऐसे में जब हम किसी अंधेरे कमरे में जाते हैं, जहां कहीं लाइट की एक रोशनी भी नहीं होती तो हमें कुछ दिखाई नहीं देता क्योंकि लाइट की एब्सेंस में ये रिफ्लेक्शन नहीं होता। हमारी आंखों में फोटो रिसेप्टर्स मौजूद होते हैं, जो लाइट को रिसीव करते हैं और ब्रेन को इमेज बनाने में मदद करते हैं। ये सभी कोंस रिसेप्टर्स रेटीना में मौजूद होते हैं, जिनसे कलर आइडेंटिफाई किए जाते हैं।